19

आनंदमयी कविता

चाँद का बच्चा

वह देखो वह निकला चाँद,
अम्मा तुमने देखा चाँद!
यह भी क्या बच्चा है अम्मा,
छोटा-सा मुन्ना-सा चाँद।

इतना दुबला, इतना पतला,
कब होता है ऐसा चाँद!
अम्मा उस दिन जो निकला था,
वह था गोल बड़ा-सा चाँद।
बादल से हँस-हँसकर उस दिन,
कैसा खेल रहा था चाँद!

छुप जाता था, निकल आता था
करता था यह तमाशा चाँद।
अपने बच्चे को भेजा है,
घर में बैठा होगा चाँद।
यह भी एक दिन बन जाएगा,
अच्छा गोल बड़ा-सा चाँद।

अच्छा अम्मा कल क्यों तुमने,
मुझको कहा था मेरा चाँद।

– अफ़सर मेरठी

बातचीत के लिए

1. यह कविता किसके विषय में है?
2. कविता का नाम 'चाँद का बच्चा' क्यों रखा गया होगा?
3. आप इस कविता को क्या नाम देना चाहेंगे और क्यों?
4. क्या चाँद हमेशा गोल ही दिखता है?
5. आपकी माँ आपको क्या कहकर पुकारती हैं?

शब्दों का खेल

नीचे दी गई वस्तुएँ कैसी हैं— गोल, चौकोर, तिकोनी? रेखा खींचकर मिलाइए –

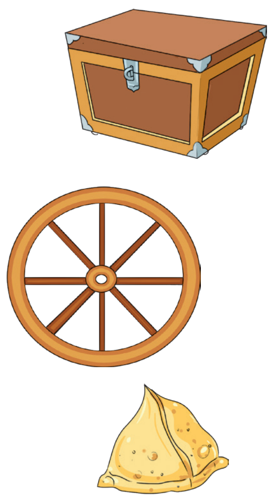

तुक मिलने वाले शब्दों को खोजकर लिखिए –

गोल – ....

चाँद – ....

बड़ा – ....

छोटा – ....

कौए की कहानी

1

2

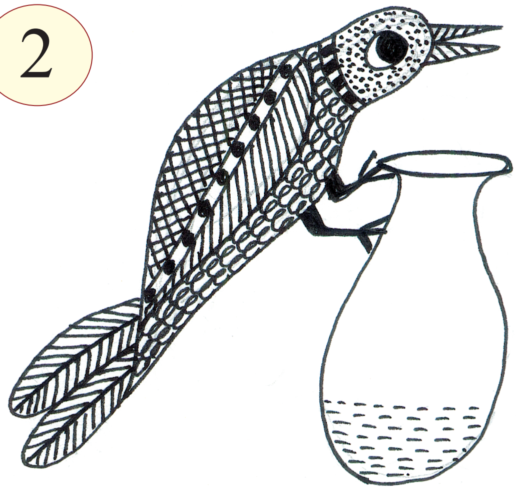

3

4

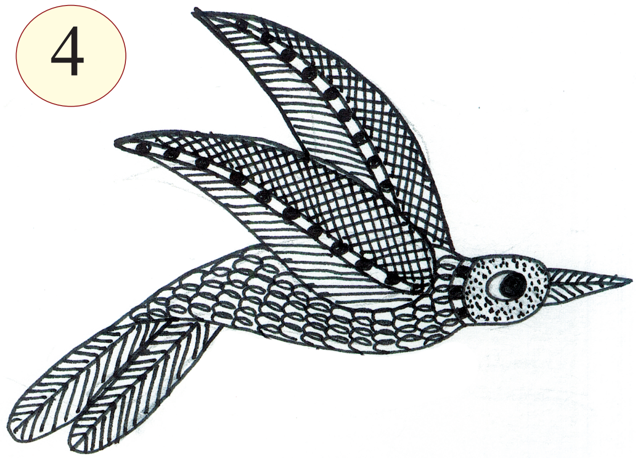

शिक्षण-संकेत – बच्चों को चित्रों के आधार पर अपने मन से कहानी बनाने और अपनी भाषा में सुनाने के लिए कहें। बच्चों को कहानी को आगे बढ़ाने के लिए भी प्रोत्साहित करें।

आओ कुछ बनाएँ

अपने आस-पास नीचे गिरे हुए फूल, पत्ते, डंडियाँ एकत्र कीजिए। छोटे समूह में बैठकर इनसे कुछ आकृतियाँ बनाइए। आप तितली, पेड़ आदि भी बना सकते हैं। आकृतियाँ बनाने के बाद कक्षा में सभी को बताइए कि आपने ये कैसे बनाईं।

चित्रकारी और लेखन

दिए गए चित्र में आप क्या-क्या देख पा रहे हैं? कुछ नाम लिखिए –

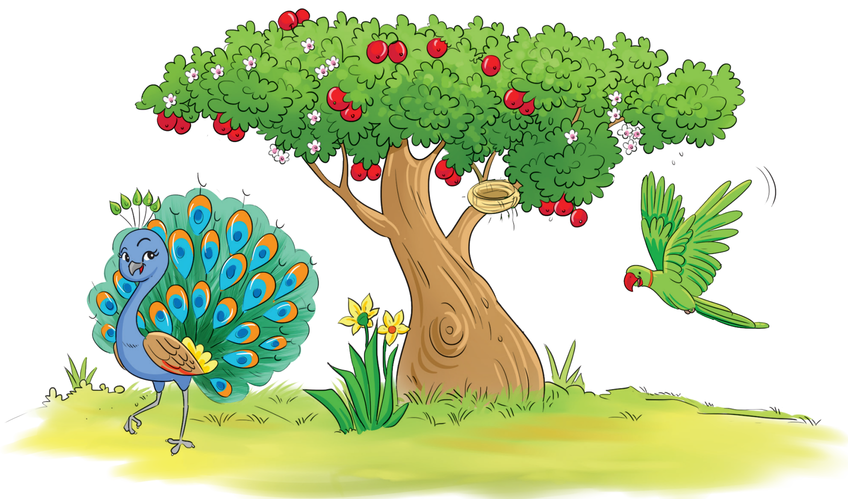

....

....

अब इन शब्दों से वाक्य बनाइए –

1. यह एक पेड़ है।
2. ....
3. ....
4. ....

खोजें-जानें

आपके घर के आस-पास जो पेड़-पौधे हैं, उनके नाम जानिए। कुछ पेड़-पौधों के चित्र बनाइए। अपने चित्र के साथ कुछ शब्द भी लिखने का प्रयत्न कीजिए। कक्षा में सभी को बताइए।

खेल-खेल में

इस कविता को मिलकर गाइए।

दो समूह बनाइए। एक समूह प्रश्न पूछेगा और दूसरा समूह उत्तर देगा।

कौन परिंदा

कौन परिंदा बोले चूँ-चूँ
कौन परिंदा गुटरू-गूँ
कौन परिंदा पीहू-पीहू
कौन परिंदा कुकड़ू-कूँ।
कौन परिंदा बोले काँव-काँव
कौन परिंदा बोले कुहू-कुहू
कौन परिंदा बोले टें-टें
नकल उतारे हू-ब-हू!

– श्याम सुशील

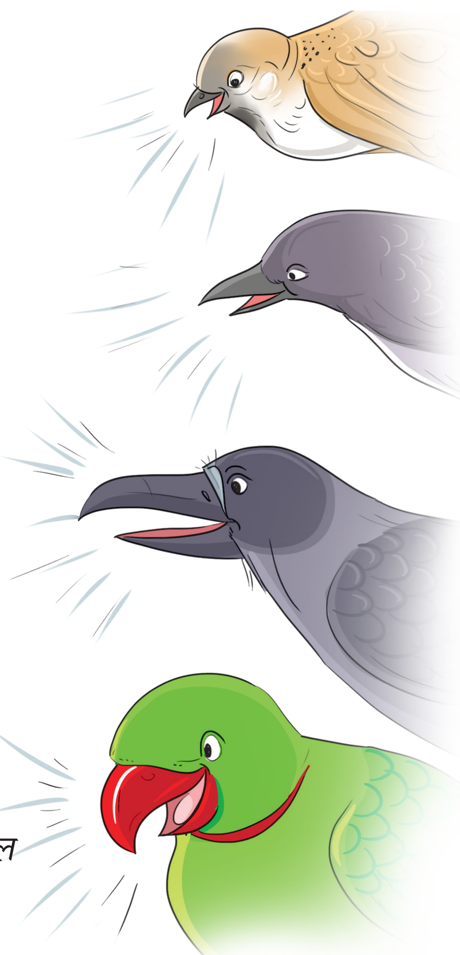

शब्दों का खेल

कविता में आए 'कौन' शब्द पर घेरा लगाइए। पेड़ पर लगे अक्षरों से शब्द बनाइए –

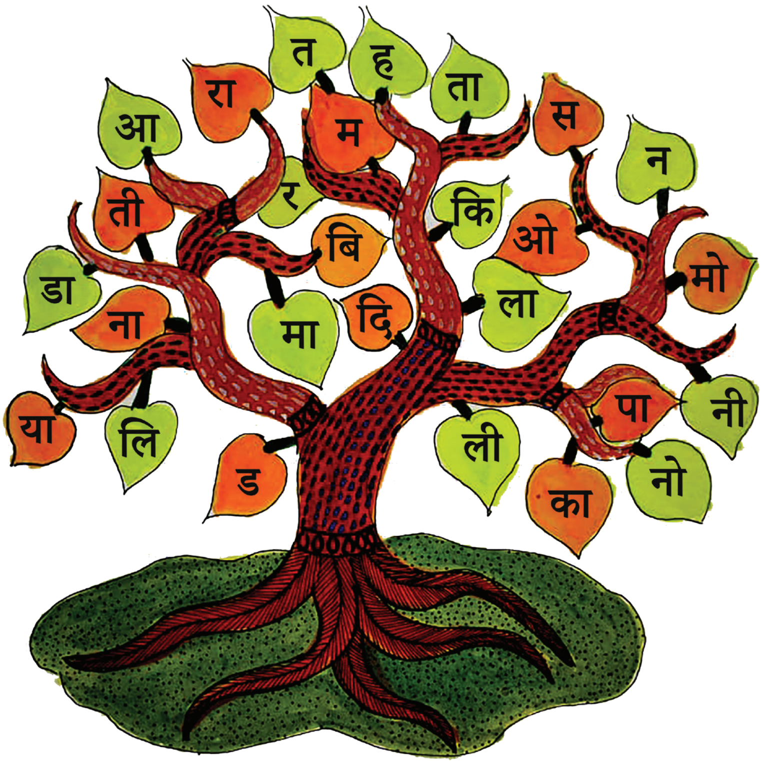

....

....

....

....

....

....

पढ़िए और लिखिए

कविता को आगे बढ़ाइए –

हमने तीन चीज़ें देखीं

हमने तीन चीज़ें देखीं, बाबा तीन चीज़ें देखीं
हमने बाग में देखी मकड़ी
वह तो खा रही थी ....ककड़ी........
उसके पास पड़ी थी ....लकड़ी........

हमने तीन चीज़ें देखीं, बाबा तीन चीज़ें देखीं
हमने बाग में देखा भालू
वह तो खा रहा था ....
नाम था उसका ....

हमने तीन चीज़ें देखीं, बाबा तीन चीज़ें देखीं
हमने बाग में देखा बंदर
वह तो खा रहा था ....
नाम था उसका ....

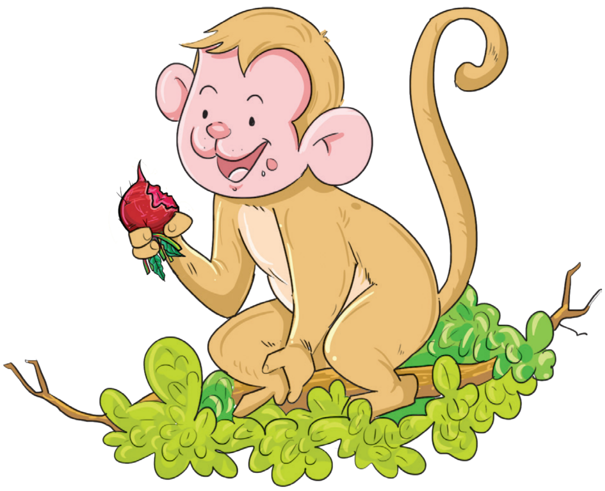

शब्दों में आए अक्षरों के अनुसार उन्हें 'ठ', 'ध', 'ढ', 'ष' के घर में छाँटकर लिखिए –

ठाठ धोती ढक्कन धनुष साठ ढोलक धान
बैठ ढीला उषा ठेला षट्कोण धागा

ठ
....
....
....
....

ध
....
....
....
....

ढ
....
....
....
....

ष
....
....
....
....

अक्षर गीत

अनार दाड़िम भी कहलाता।
आम चूसकर बच्चा खाता॥

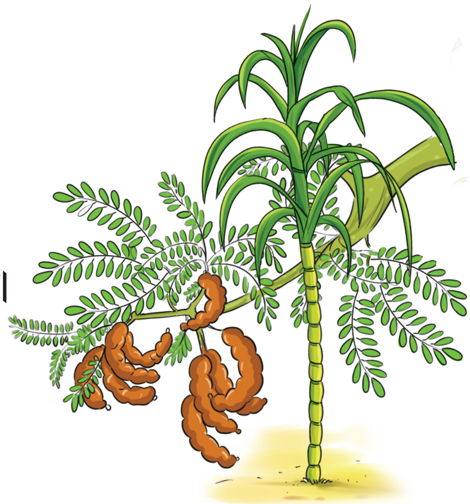

इमली तो खट्टी होती है।
ईख सदा मीठी होती है॥

उल्लू रात में जगते रहते।
ऊदबिलाव जल-थल में रहते॥

ऋषि-मुनि आकर हवन कराते।
ॠ तो संस्कृत में ही पाते॥

(**ऌ** भी संस्कृत में ही होता।
ॡ का तो कुछ पता न चलता॥)

एड़ी में काँटा चुभ जाता।
ऐनक कानों पर चढ़ जाता॥

ओखल में कूटते हैं अनाज।
औषधि करती रोग इलाज॥

स्वर सब यहीं समाप्त होते हैं।
अब हम व्यञ्जन पर चलते हैं॥

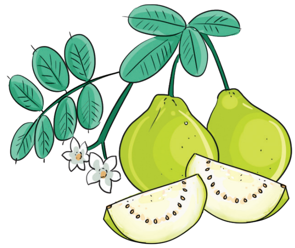

अंशक अमरूदों के लाओ।
अः अः सब मिल उनको खाओ॥

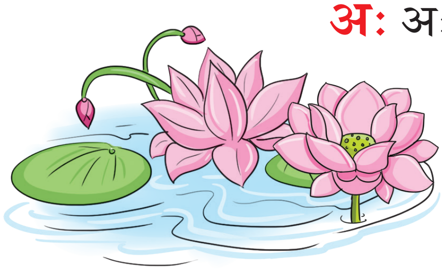

कमल ताल में सबको भाते।
खरल में मसाले पिस जाते॥

गमलों में पानी दे आना।
घड़ियालों के पास न जाना॥

क**ङ्**घे से माँ बाल बनातीं।
क से **ङ** ध्वनि कण्ठ से आतीं॥

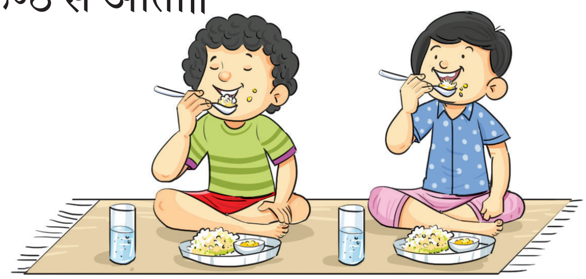

चम्मच से हम खाना खाते।
छतरी बारिश में ले जाते॥

"**ज**न-गण-मन" सब बच्चे गाते।
झण्डा खम्भे पर फहराते॥

प**ञ्**चम स्वर में कोयल गातीं।
च से **ञ** ध्वनि तालु से आतीं॥

टट्टू रस्ते में अड़ जाता।
ठठेरा उत्तम पात्र बनाता॥

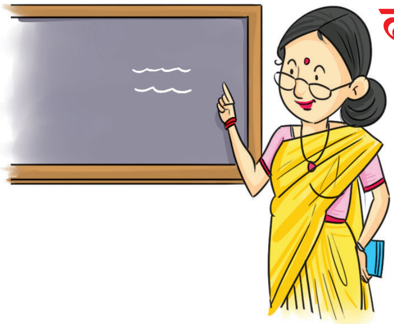

डलिया में तुम फूल सजाओ।
ढक्कन शीशी पर लगवाओ॥

प**ण्**डता हमको पाठ पढ़ातीं।
ट से **ण** ध्वनि मूर्धा से आतीं॥

तबला लड़का बजा रहा है।
थर्मस से चाय पिला रहा है॥

दरी बैठ हम गाना गाते।
धनुष उठा हम तीर चलाते॥

नल से नानी पानी लातीं।
त से **न** ध्वनि दाँत से आतीं॥

पतङ्ग से बच्चे पेच लड़ाते।
फल पेड़ों से तोड़ कर खाते॥

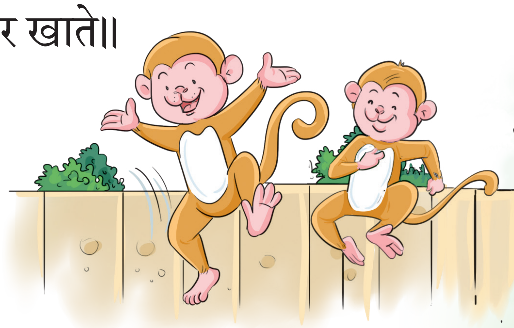

बन्दर कूद-फाँदकर आए।
भगोने लोटे सब लुढ़काए॥

मटर-कचौरी बुआ बनातीं।
प से **म** ध्वनि ओष्ठ से आतीं॥

यज्ञ में घी की आहुति देते।
रबड़ी हलवाई से लेते॥

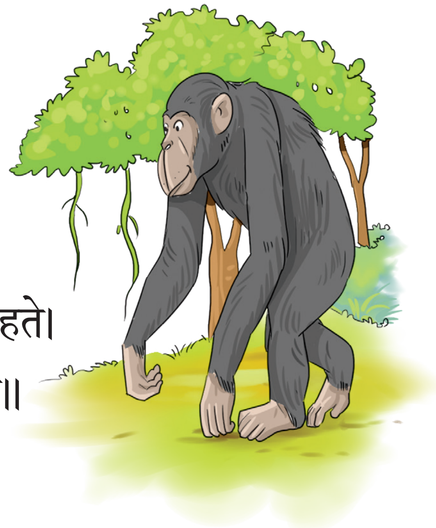

लवण नमक को भी हैं कहते।
वनमानुष जङ्गल में रहते॥

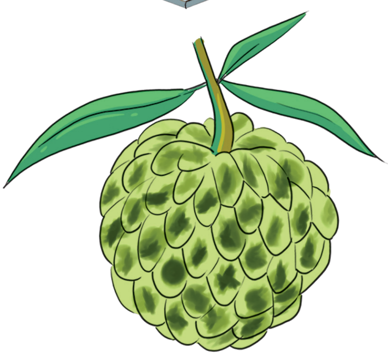

दो-स्वर-मेल से **य र ल व** आते।
अत: अर्धस्वर ये कहलाते॥

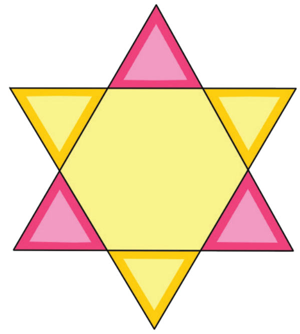

शरीफ़ा पकने पर ही खाओ।
षट्कोण चित्र स्वयं बनाओ॥

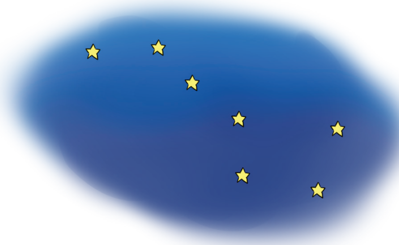

सप्तर्षि आकाश चमकाते।
हल किसान खेतों में चलाते॥

श ष स ह ऊष्म कहाते।
अक्षर यहीं समाप्त हो जाते॥

यही वर्णमाला हम गाते।
मिल-जुल अपना ज्ञान बढ़ाते!

आपको अब सब अक्षर आते?

– मंजुल भार्गव

शिक्षण-संकेत – यह कविता केवल आनंद के लिए है। बच्चों को आनंद के साथ इसके अलग-अलग खंडों को वर्ष-भर गाने के लिए प्रोत्साहित करें।

प्यारे बच्चो!

यदि कोई आपको अनुचित ढंग से स्पर्श करे और यह स्पर्श आपको अच्छा न लगे तो, आप चुप न रहें। आप

1. स्वयं को इसका दोष न दें;
2. इस बारे में किसी ऐसे व्यक्ति को बताएँ जिस पर आप भरोसा करते हो;
3. आप **पॉक्सो ई.बॉक्स** के माध्यम से राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग को भी इस बारे में सूचित कर सकते हैं।

जब आपको कोई अनुचित ढंग से स्पर्श करता है तो आपको बुरा लग सकता है, आप दुविधाग्रस्त और असहाय अनुभव कर सकते हैं

आपको ''बुरा'' अनुभव करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आपकी गलती नहीं है

इस बटन को दबाएँ

पॉक्सो ई.बॉक्स NCPCR@gov.in पर उपलब्ध है।

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

यदि आपकी आयु 18 वर्ष से कम है और आप मुसीबत में हैं अथवा दुविधाग्रस्त हैं अथवा आपके साथ दुर्व्यवहार किया गया है अथवा संकट में हैं अथवा किसी ऐसे बच्चे को जानते हैं...

1098 पर कॉल करें...क्योंकि कुछ अच्छे नंबर जीवन बदल देते हैं।

चाइल्ड लाइन 1098 - विपत्ति में बच्चों के लिए 24 घंटे निःशुल्क राष्ट्रीय आपातकालीन फ़ोन सेवा, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के सहयोग से चाइल्ड लाइन इंडिया फ़ाउंडेशन की पहल है।

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

आज़ादी का अमृत महोत्सव

0122

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5292-423-3